श्रीमद्भगवद् गीता

धृतराष्ट्र ने कहा –

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय।।

हे संजय! धर्मभूमि कुरुक्षेत्र में युद्ध की इच्छा से एकत्र हुए मेरे और पाण्डु के पुत्रो ने क्या किया ?

अर्जुन ने कहा –

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।।

कायरता के दोष से मेरा सत्य स्वभाव नष्ट हो गया है और धर्म का भाव भी मोहित हुए चित्त ने भुला दिया है इसलिए मेरे लिए जो कल्याणकारी कर्म है वह निश्चित करके मुझे बताए। मै आपकी शरण में आया हूं।

श्रीभगवान ने कहा –

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः।।

हे अर्जुन! तू शोक न करने योग्य व्यक्तियों के लिए शोक करता है और विद्वानो जैसा कथन कहता है परन्तु जीते मरे का शोक ज्ञानीजन कभी नही करते।

न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः।
न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम्।।

न तो ऐसा ही है कि मै किसी काल में नही था या तू नही था अथवा ये राजा लोग नही थे और ऐसा भी नही है कि हम सब आगे नही होंगे।

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति।।

जिस प्रकार शरीर में बचपन, जवानी और वृद्धावस्था आती है उसी प्रकार देहान्त के बाद नया शरीर प्राप्त होता है। अतः इस विषय में धीर पुरुष मोह में नही आता।

Death is a stage to be passed as we would pass from childhood to youth or from youth to manhood.

……Sears

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्तु अनयोस्तत्त्वदर्शिभिः।।

जो असत् है – अर्थात जिसका वास्तव में अस्तित्व नही है जैसे सुख–दुख – वह नहीं रहता है और जो सत् है – जैसे आत्मा – उसका कभी अभाव नही हो सकता। इन दोनो का तत्व इसी प्रकार तत्वज्ञानियों द्वारा देखा गया है।

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्।
विनाशम् अव्ययस्य अस्य न कश्चित्कर्तुमर्हति।।

तू उसे अविनाशी जान जिससे यह संपूर्ण जगत् व्याप्त है। इस अविनाशी का विनाश करने में काई भी समर्थ नही है।

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत।।

यह देह समाप्त होने वाली है लेकिन इस देह में रहने वाला आत्मा नित्य एवं अविनाशी है। इसलिए इस आत्मा को अनित्य समझते हुए हे भारत तू युद्ध कर।

अज़ल क्या है ? खुमारे बादये हस्ती उतर जाना।

..... चकबस्त

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते।।

जो इस आत्मा को मारने वाला समझता है या जो इसे मरने वाला समझता है वे दोनो ही इसे नही जानते क्योंकि यह आत्मा न तो मरता है और न मारता है।

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

यह आत्मा किसी भी काल में न तो जन्मता है और न मरता है तथा न यह उत्पन्न होकर फिर होने वाला है क्योंकि यह अजन्मा, नित्य, सनातन और पुरातन है और शरीर के मारे जाने पर भी यह नही मारा जाता।

जीव नित्य तुम केहि हित रोवा

.....तुलसीदास

वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम्।
कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम्।।

इस आत्मा को जो पुरुष नाशरहित, नित्य, अजन्मा और न समाप्त होने वाला जानता है वह कैसे किसी का वध करता और कराता है ?

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।।

जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को उतार कर नए वस्त्र पहनते हैं उसी प्रकार यह आत्मा पुराने जीर्ण शरीर को छोडकर नए शरीर को ग्रहण करता है।

There is no death what seems so is transition

……. Longfellow

The soul, immortal as its Sire, shall never die

…….. Montgomery

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।

इस आत्मा को शस्त्र नही काट सकते, न आग जला सकती है, इसको जल भी नही गला सकता और न वायु सुखा सकता है।

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः।।

यह आत्मा छेदने योग्य, जलने योग्य, गलने योग्य, सूखने योग्य नही है। यह नित्य सर्वव्यापी, अचल, स्थिर और सनातन है।

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि।।

यह आत्मा अव्यक्त है अर्थात इन्द्रियों की पहुंच से परे है, अचिन्त्य है अर्थात मन, बुद्धि के चिन्तन से परे है, यह विकार रहित है। उसको इस प्रकार जानकर शोक करना उचित नही है।

अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम्।
तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि।।

यदि इस आत्मा को तुम सदा जन्म लेने वाला व सदा मरने वाला मानते हो तब भी हे महाबली तुम्हे इस प्रकार शोक नही करना चाहिए।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।।

जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है और मरे हुए का जन्म निश्चित है अतः ऐसी अटल बात के विषय में तुम्हे शोक नही करना चाहिए।

The seed dies into a new life and so does man.

…….. George Macdonald

बस इतना फर्क है इन्सान में और उसकी तुरबत में।
वो है एक ढेर मिट्टी का ये है तस्वीर मिट्टी की।।

..... मंजूर

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना।।

सम्पूर्ण प्राणी जन्म से पहले अप्रकट थे और मृत्यु के बाद भी अप्रकट हो जाने वाले हैं केवल मध्य में ही प्रकट होते हैं फिर ऐसी स्थिति में क्या शोक करना।

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनम् आश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः।
आश्चर्यवच्चैनम् अन्यः श्रृणोति श्रुत्वापि ऐनं वेद न चैव कश्चित्।।

इस आत्मा को कोई आश्चर्यपूर्वक देखता है कोई इसका आश्चर्यपूर्वक वर्णन करता है और कोई इसको आश्चर्यवत् सुनता है परन्तु फिर भी इसे नही जान पाते।

देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत।
तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि।।

यह आत्मा सबके शरीरों में न मरने वाला अमर है इस कारण सम्पूर्ण प्राणियों के लिए तुम्हें शोक नहीं करना चाहिए।

Death is itself nothing, but we fear to be, we know not what, we know not where.

…….. Dryden

भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः।
येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम्।।

जो महारथी तुमको बहुत सम्मानपूर्वक देखते हैं वे यह मानकर कि भय के कारण रण छोड़कर भाग गया तुम्हे तुच्छ दृष्टि से देखेंगे।

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः।।

यदि तुम युद्ध में मारे गए तो तुम्हे स्वर्ग प्राप्त होगा और यदि जीत गए तो पृथ्वी का राज्य भोगोगे इस कारण हे कौन्तेय तुम युद्ध का निश्चय करके खड़े हो जाओ।

Either live with glorious victory or die with fame.

……Shakespeare

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।।

सुख–दुख, लाभ–हानि, जय–पराजय को एक समान समझ कर युद्ध के लिए तैयार हो जाओ। इस प्रकार युद्ध करने से तुम पाप को प्राप्त नही होगे।

भाग – 2

एषा तेऽभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां श्रृणु।
बुद्धया युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि।।

हे पार्थ! यह सांख्य का ज्ञान मैने तुम्हे बताया अब बुद्धि योग का ज्ञान बताता हूं जिसको जानकर तुम कर्म के बंधन से मुक्त हो जाओगे।

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते।
स्वल्पम् अपि अस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।।

इस बुद्धि योग में आरम्भ का नाश नही है और उल्टा फलरुप दोष भी नही होता है, बल्कि इस धर्म का थोडा सा भी साधन जन्म–मृत्यु रुपी महान भय से रक्षा करता है।

व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन।
बहुशाखा हि अनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम्।।

इस मार्ग में निश्चयात्मक बुद्धि एक ही होती है परन्तु अस्थिर विचार वाले विवेकहीन सकाम मनुष्यों की बुद्धियां निश्चय ही बहुत भेद वाली और अनेक होती हैं।

भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम्।
व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते।।

जो भोग और ऐश्वर्य में आसक्त हैं और जिनके चित्त को कर्मफल के प्रशंसक व्यक्तियों द्वारा हर लिया गया है उनकी निश्चयात्मक बुद्धि ईश्वर में समाधिस्थ नही हो पाती है।

इष्ट और पूर्त सकाम कर्मो को ही श्रेष्ठ मानने वाले घोर मूढ़ उससे परे वास्तविक ज्ञेय–परमात्मा को नहीं जान पाते।

..... मुण्डक उपनिषद

त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन।
निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्।।

वेद तीनो गुणो (तमो गुण, रजो गुण, सतो गुण) के कार्यरुप समस्त भोगों एवं उनके साधनो को प्रतिपादित करने वाले हैं, लेकिन हे अर्जुन! तुम तीनो गुणों से ऊपर उठो और हर्ष, शोक आदि द्वन्दो से रहित, योग–क्षेम से रहित, नित्य वस्तु ईश्वर में स्थित और आत्मवान होओ।

यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके।
तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः।।

जिस प्रकार जलाशय से जल लेने के बाद उसका प्रयोजन समाप्त हो जाता है उसी प्रकार ब्रह्म को जानकर विद्वान व्यक्ति का प्रयोजन समस्त वेदों से समाप्त हो जाता है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भुर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।

तेरा कर्म करने में ही अधिकार है उसके फल मे नही इसलिए तू कर्मफल की चाहना मत कर लेकिन कर्म करना भी मत छोड़।

You need not be solicitous about power, nor strive after it. If you be wise and good, it will follow you though you should not wish it.

…….. King Alfred

योगस्थः कुरु कर्माणि संग त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।

हे धनन्जय! तू आसक्ति को त्यागकर सिद्धि और असिद्धि को समान मानते हुए योग में स्थित हेाकर कर्म कर। समत्व – समता ज्ञान ही योग है।

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय।
बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणः फलहेतवः।।

हे अर्जुन! इस बुद्धि योग से अन्य सभी कर्म (सकाम कर्म) अत्यन्त ही निम्न श्रेणी के हैं अतः तू इस बुद्धि योग की शरण ले। जो कर्म फल की चाहना करते है वे अत्यंत दीन हैं।

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते।
तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम्।।

जो व्यक्ति इस बुद्धि योग को जानता है वह पाप–पुण्य में नही पड़ता। अतः इस समत्व योग को अपना ले, यह योग ही कर्मों में कुशलता है।

अर्जुन ने पूछा –

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम्।।

हे केशव! स्थितप्रज्ञ किसे कहते हैं ? समाधिस्थ किसे कहते हैं ? स्थिर बुद्धि व्यक्ति कैसे बोलता है ? कैसे बैठता है ? और कैसे चलता है ? (कैसे जीवन जीता है ?)

श्रीभगवान ने कहा –

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते।।

हे अर्जुन! जब व्यक्ति मन में उत्पन्न सभी कामनाओं को छोड़ देता है और स्वयं आत्मा में ही संतुष्ट रहता है तब उसे स्थितप्रज्ञ कहते हैं।

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते।।

जिस व्यक्ति का मन दुःखों को प्राप्त होने पर भी उद्वेलित नही होता और सुखों की प्राप्ति में जो निःस्पृह रहता है, तथा जिसके राग, भय और क्रोध नष्ट हो गए हैं ऐसे व्यक्ति को स्थिरबुद्धि मुनि कहा जाता है।

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम्।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।।

जो व्यक्ति शुभ या अशुभ को प्राप्त करके सर्वदा स्नेहरहित रहता है और न किसी का अभिनन्दन करता है और न किसी से द्वेष करता है उसकी बुद्धि स्थिर होती है।

So long as the mentality is inconstant and inconsequent it is worthless.

……. Cicero

यदा संहरते चायं कूर्मोऽन्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।।

जिस प्रकार कछुआ सब ओर से अपने अंगो को समेट लेता है उसी प्रकार जो व्यक्ति इन्द्रियों के विषयों से इन्द्रियों को समेट लेता है उसकी बुद्धि स्थिर होती है।

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते।।

इन्द्रियों के द्वारा विषयों को ग्रहण न करने वाले व्यक्ति के विषय तो निवृत्त हो जाते हैं परन्तु उनमें रहने वाली आसक्ति निवृत्त नही होती। लेकिन स्थितप्रज्ञ व्यक्ति की आसक्ति भी ब्रह्म का साक्षात करके निवृत्त हो जाती है।

यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः।।

हे अर्जुन! बुद्धिमान व्यक्ति यत्नपूर्वक इन्द्रियदमन करता है परन्तु बलवान इन्द्रियां उसके मन को बलात हर लेती हैं।

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठता।।

उन इन्द्रियों पर संपूर्ण संयम करके व्यक्ति मुझमें ध्यान करे। जिसकी इन्द्रियां उसके वश में होती हैं उसी की बुद्धि स्थिर होती है।

ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते।
संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते।।

पुरुष विषयों का ध्याान करते हैं उससे उनमें आसक्ति उत्पन्न होती है, आसक्ति से उन विषयों की कामना उत्पन्न होती है, कामना में विध्न पडने से क्रोध उत्पन्न होता है।

क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।।

क्रोध से मोह उत्पन्न होता है, मोह से स्मृति भ्रम हो जाता है, स्मृतिभ्रम से बुद्धि का नाश हो जाता है और बुद्धि नाश से प्राणानाश हो जाता है।

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।
नचाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्।।

जिसके वश में मन और इन्द्रियां नही हैं ऐसे अयुक्त व्यक्ति के पास निश्चयात्मक बुद्धि और उत्तम भावना नही होती। बिना उत्तम भावना के शान्ति नही मिलती और शान्तिरहित व्यक्ति को सुख कैसे मिल सकता है।

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावम् इवाम्भसि।।

जिस प्रकार जल में चलने वाली नाव को वायु हर लेती है उसी प्रकार इन्द्रियों के साथ चलने वाला मन बुद्धि को हर लेता है।

तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यः तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।।

हे महाबाहु! जिस व्यक्ति द्वारा अपनी इन्द्रियां विषयों से हटा ली गई हैं और सदा हटी रहती हैं उसी की बुद्धि स्थिर होती है।

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः।।

जो सब प्राणियों के लिए रात्रि होती है उसमें स्थितप्रज्ञ योगी जागता है और जिसमें सब प्राणी जागते हैं उसे मुनि रात्रि के समान देखता है।

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत्।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी।।

जल से लबालब भरे हुये समुद्र में नदियों द्वारा लगातार जल डालते रहने पर भी जिस प्रकार समुद्र विचलित नहीं होता है उसी प्रकार जिस व्यक्ति में कामनायें प्रवेश करके भी उसें विचलित नही कर पाती वही शान्ति प्राप्त करता है, कामनाओं में बहने वाला नहीं।

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निस्पृहः।
निर्ममो निरहंकार स शान्तिमधिगच्छति।।

जो व्यक्ति संपूर्ण कामनाओं को त्यागकर निःस्पृह, ममतारहित, अहंकाररहित रहता है वही शान्ति प्राप्त करता है।

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वा स्याम् अन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति।।

हे अर्जुन! यह ब्राह्म स्थिति है, इसको प्राप्त करके व्यक्ति कभी मोहित नही होता और अन्त काल तक इस स्थिति में रहकर ब्रह्मनिर्वाण को प्राप्त करता है।